REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 13 | ISSUE - 7 | APRIL - 2024

बैगा जनजाति में खेल के प्रति अभिरूचि का अध्ययन

मनोज कुमार खरोले[1] , डॉ. भरत कुमार विश्वकर्मा[2]
[1]शोधार्थी शारीरिक शिक्षा, लाइफ लॉंग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.).
[2]विभागाध्यक्ष, शारीरिक शिक्षा विभाग , श्रीयुत महाविद्यालय, गंगेव, जिला रीवा (म.प्र.)

सारांश –

खेल और खेल जैसी गतिविधियाँ समाज में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। वे सामाजिक, मानसिक, और शारीरिक विकास के लिए अत्यंत आवश्यक होती हैं। हालांकि, कई समुदाय और जातियों में खेल के प्रति अभिरुचि की अनूठी धारणा और प्रथा होती है। बैगा जनजातियों के लिए खेल हेतु संचार सबसे बुनियादी आवश्यकता है, जो जीवनयापन के लिए बुनियादी सुविधाओं के बिना दयनीय जीवन जीने को मजबूर है। उचित संचार उनके हितों को मजबूत करने और उनकी सुरक्षा करने में बहुत बड़ी भूमिका निभा सकता है। शोधकर्ताओं का मानना है कि उन्हें अलग–थलग जीवन पसंद है क्योंकि वे अपने समुदाय की शुद्धता को सुरक्षित रखना चाहते हैं। इसलिए वे मुख्यधारा के समाज और यहाँ तक कि अन्य आदिवासी लोगों के साथ भी घुल मिल नहीं पाते हैं। उनकी सांस्कृतिक और पारम्परिक मान्यताएँ अलगाव की विचारधारा की वकालत करती है। लेकिन ये चलन धीरे–धीरे बदल रहा है, बढ़ते संचार माध्यमों और तकनीको से बैगा समुदाय की नई पीढ़ी ने अन्य लोगों तथा खेलों के प्रति अपना एकीकरण दिखाया है।

मुख्य शब्द – सामाजिक, मानसिक, शारीरिक, खेल, बैगा, जनजातियाँ और अभिरुचि।

प्रस्तावना –

बैगा जनजातियाँ भारतीय आबादी का बहुत कम हिस्सा है और इन्हें देश के विशेष रूप से कमजोर आदिवासी समूहों के अंतर्गत रखा गया है। सीमित संसाधनों एवं गरीबी के कारण बैगा जनजाति नये विकास एवं खेल तकनीकों से वंचित रह गये हैं। संचार बैगा जनजातियों के विकास के लिए सरकार की पहल में उत्प्रेरक के रूप में कार्य कर सकता है।[1] यह इन लोगों के जीवन में क्रांति लाने की क्षमता रखता है। बैगा जनजाति के सदस्य अन्य जनजातियों जैसे गोंड आदि से भी मेलजोल नहीं रखते, क्योंकि किसी भी अन्य जनजाति से मेलजोल (विवाह आदि जैसे सम्बन्ध बनाना) उनके लिए अपराध हैं। कई दस्तावेजों के अनुसार परिवार में मृत्यु के बाद बैगा घर छोड़ देते हैं और दूसरा घर बना लेते हैं, लेकिन अब ऐसी परम्परा नहीं है।[2] जंगल पर निर्भर होने के कारण, वे तेंदूपत्ता संग्रहण में भी लगे हुए हैं, जो मध्यप्रदेश के एक प्रमुख आजीविका प्रदाता है। वे जंगली इलाकों में एक साधारण जीवन शैली जीते हैं और अद्वितीय गुणों वाली सबसे आदिम जनजाति हैं। उनके वंश कला रूप उन्हें प्रकृति से जोड़ते हैं।

जनजातीय लोगों की विशेषता उनकी गहन काव्यात्मक अभिव्यक्ति है, इन्हें कभी भी एकल प्रदर्शन नहीं किया जाता बल्कि समूह में प्रस्तुत किया जाता है, जो नाटक और नृत्य से भरपूर होते हैं। आदिवासी गीत भी

ऋतु आधारित होते हैं जो ऋतुओं के आगमन या परिवर्तन की घोषणा करते हैं। प्रसिद्ध मानवविज्ञानी वेरियर एल्विन के शब्दों में जो जनजाति नृत्य करती है वह मरती नहीं है।

विश्लेषण –

बैगा जनजातियाँ मौखिक चैनलों के माध्यम से पारस्परिक या समूह संचार पर अधिक निर्भर हैं। इस संचार विधा में, बैगा मुख्य रूप से मौखिक कलाओं में लगे हुए हैं, जिसमें अभिव्यंजक साहित्य शामिल हैं जिसमें बोले गये शब्द, गाने, गाथागीत, कविताएं, कहानी, कहने, उपाख्यान, तुकबंदी, पहेलियाँ, कहावतें जैसे पारम्परिक उच्चारण शामिल हैं।[3] संचार की इस पद्धति में कला और शिल्प, वास्तुशिल्प डिजाइन, पारम्परिक रूपांकनों, कपड़े और गहने, खेत, मछली पकड़ने, पारम्परिक संगीत, नृत्य और नाटक जैसे लोक व्यवहार के दृश्य पहलू भी शामिल हैं। बैगा जनजाति जन्म, मृत्यु और विवाह जैसी प्रमुख घटनाओं के बारे में जानकारी साझा करने या आदान–प्रदान करने के लिए अपने समूहों के भीतर मौखिक रूप से संवाद प्रचार करना पसंद करती है। चूंकि साक्षर बहुत कम हैं, इसलिए लिखित पत्रों के माध्यम से सूचित करने वालों की संख्या बहुत कम है। यह इन जनजातियों के बीच संचार का सबसे कम लोकप्रिय माध्यम है।[4]

गौतम, 2011 द्वारा किये गये एक अध्ययन में पाया गया है कि 409 बैगा उत्तरदाताओं में से केवल 12. 50 प्रतिशत ने पत्र लिखे हैं, और उनमें से 14.40 प्रतिशत को पत्र प्राप्त हुए हैं। जबकि केवल 5.1 प्रतिशत ने नए जन्म के बारे में अपनी खुशी व्यक्त करने के लिए संचार माध्यम के रूप मे पत्रों का उपयोग किया, केवल 4.4 प्रतिशत ने पत्रों के माध्यम से परिवारों में मृत्यु का दुःख साझा किया। अपने अध्ययन में, गौतम ने पाया है कि अधिकांश उत्तरदाताओं ने दूतों का उपयोग किया या अपने परिवार की किसी भी बडी घटना के बारे में मौखिक रूप से सूचित करना पसंद किया।

भाषाई कौशल, बैगा, आम तौर पर अपनी मातृभाषा बैगानी बोलते हैं जो इंडो द्रविड परिवार से सम्बन्धित है। वे हिन्दी भाषा में भी बात करते हैं। वे अपने समूह के अंदर अपनी मातृभाषा में संवाद करते हैं। हालांकि, बाहरी लोगों के साथ संवाद करने के लिए हिन्दी का उपयोग किया जाता है। बैगा द्वारा प्रयुक्त हिन्दी मिश्रित प्रकार की है जिसे बोलचाल की हिन्दी कहा जाता है। बैगाओं के पास अपनी मातृभाषा के लिए कोई अलग विधि नहीं है। कुछ साक्षर बैगा जनजाति लिखित रूप से संचार करने के लिए देवनागिरी लिपि का उपयोग करते हैं। ये जनजातियाँ गोंडी भाषा भी जानती हैं, जो गोंड नामक एक अन्य आदिवासी समूह द्वारा बोली जाती है।[5]

वेब स्रोत एनसाइक्लोपीडिया के अनुसार बैगा जनजातियों ने अपनी मूल ओस्ट्रोएशियाटिक भाषा के सभी निशान खो दिए हैं। अब वे जहाँ रहते हैं वहाँ अपने पड़ोसियो की बोली बोलते हैं। वेब स्रोत ने वेरियर एल्विन 1939 को उदधृत करते हुए कहा है कि बैगा जनजातियों को बिलासपुर में छत्तीसगढ़ी, मंडला और जबलपुर में संशोधित पूर्वी हिन्दी और बालाघाट में मराठी, हिन्दी, गोंडी ओर बैगानी (या उनका संयोजन) बोलते हुए पाया गया।[6] एल्विन ने अपनी पुस्तक द बैगा 2007 में बैगानी भाषा को छत्तीसगढ़ी का भ्रष्ट रूप कहा है। अपनी किताब में कर्नल वार्ड को उदधृत करते हुए एल्विन कहते हैं कि बैगा को ज्ञात एकमात्र भाषा हिन्दी थी वह आगे कहते हैं कि आज के बैगा केवल अपने पड़ोसियों की भाषा बोलते हैं। यह दर्शाता है कि संचार और सूचना साझा करने के लिए बैगा जनजातियाँ अपने समुदाय के बाहर के लोगों से किस हद तक प्रभावित होती है। मानवविज्ञानी, जिन्होने बैगा अध्ययन का नेतृत्व किया है, आगे बताते हैं कि रहस्यमय बैगानी भाषा मराठी, हिन्दी और गोंडी का मिश्रण है।[7]

बैगा संचार के दृश्य तरीके का उपयोग करके एक दूसरे के साथ बातचीत भी करते हैं। वे नृत्य करते हैं, वे खुद को अभिव्यक्त करने के लिए अपने शरीर पर टैटू बनवाते हैं। उनके हाथ के इशारे और हरकतें, चेहरे के भाव और शारीरिक भाषा उन्हें अपने समुदाय के भीतर और समदुाय के बाहर संवाद करने में मदद करते हैं।

मौखिक परंपरा और प्रदर्शन कलाएं बैगा के लिए संचार का मुख्य माध्यम रही हैं, गायकों, नर्तकों, नाटककारों, कहानीकारों और अन्य जैसे लोक मनोरंजनकर्ताओं ने सदियों से समाचार और सूचना के प्रसार और प्रसारण के स्रोत के रूप में काम किया है।[8] ये बहुत प्रभावी हैं क्योंकि वे दर्शकों के साथ आमने सामने संचार में लगे हुए हैं जिनमें परिवार, दोस्त, सामाजिक समूह और सामुदायिक समारोह शामिल हैं।[9] वे कलाकारों के लिए संचार के मुख्य मंच और फीडबैक के स्रोत के रूप में काम करते हैं।

इन जनजातियों द्वारा अपनाए गए कुछ पारम्परिक मीडिया निम्नलिखित हैं –

1. लोक नृत्य एवं संगीत – लोकगीत एवं संगीत मौखिक साहित्य के रूप हैं जहाँ जनजातियाँ अपने उत्सवों, भावनाओं और संवेदनाओं को व्यक्त करती हैं। जीवन का यह उल्लास गीतों और नृत्यों में अपनी सहज अभिव्यक्ति पाता है। जनजातियों के पास एक मजबूत संगीत परम्परा है जो उनके हर्षित और उत्सवपूर्ण चरित्र को सर्वोत्तम रूप से चित्रित करती है। गायन और नृत्य गतिविधियाँ बैगा जैसी जनजातियों के लिए संचार और अभिव्यक्ति के प्रभावी तरीके हैं, जो सामाजिक रूप से मुख्यधारा से बहिष्कृत हैं।[10]

लोक नृत्य शैलियों के साथ लोकगीत बैगा लोगों को खुद को रचनात्मक रूप से व्यक्त करने में मदद करते हैं और उन्हें समूह के भीतर और बाहर अपनी भावनाओं और जीवन के अनुभवों को साझा करने की अनुमति देते हैं।[11] आदिवासी गीत और संगीत का विषय आमतौर पर जीवन की घटनाओं जैसे जन्म, मृत्यु, विवाह, बुआई, जुताई और कटाई से लिया जाता है। इन थीम आधारित गीतों के माध्यम से, वे अपने दैनिक जीवन के अनुभवों जैसे खुशी, और दुःख दर्द और पीड़ा सफलता और विफलता आदि को व्यक्त और साझा करते हैं।

गौतम, 2011 ने अपनी पुस्तक बैगा : द हंटर गैथेरर्स ऑफ सेंट्रल इंडिया में इन आदिवासी लोगों के तीन लोकप्रिय लोकगीतों, कर्मा, ददरिया और रीना का उल्लेख किया है। मंजीरा, चिकर्णा, ढोलक, चुटका जैसे अन्य संगीत वाद्ययंत्रों के साथ गानों को और अधिक रोचक बनाया जाता है।[12] गौतम के अनुसार लोकगीतों और नृत्य शैलियों को नर और मादा बैगा के अनुसार वर्गीकृत किया गया है। उनमें से कुछ केवल पुरूषों के लिए हैं और कुछ महिलाओं के लिए और उनमें से कुछ का प्रदर्शन दोनों लिंगों द्वारा किया जाता है। यह अनूठी विशेषता बैगा लोककथाओं और परम्परा की विशेषता है।[13] कुछ गीतों और नृत्य शैलियों की चर्चा आगे की गई है –

ददरिया – यह पुरूषों और महिलाओं दोनों द्वारा नृत्य के साथ गाया जाने वाला गीत है। गीत में काव्यात्मक अभिव्यक्तियाँ हैं, जहाँ बैगा लोग अपने जीवन के अनुभव साझा करते हैं। ये गीत आमतौर पर प्रकृति में दोह, चौपाइयाँ होते हैं। दादरिया गीत और नृत्य रूप विशेषताओं में रूपक हैं जिनमे सादृश्य और उपमा शामिल है। बैगा पुरूष ददरिया गाकर अपनी महिला समकक्षों के प्रति अपना प्यार व्यक्त करते हैं। बैगाओं में पत्नियों की शिकायत अपने पतियों से करना या बॉयफ्रेंड द्वारा गर्लफ्रैंड को लुभाने की शिकायत करना भी प्रचलित है। गीत की कछ पक्तियाँ नीचे उल्लेखित हैं – गयेला डोंगर कटेला करेला, तोर हाती बाई छोड़े हौं, घरेला रे दोस'' (एल्विन, वी.द. बैगा, पृष्ठ 438) यह गीत प्रेमी द्वारा अपनी प्रेमिका के लिए गाया जाता है, जहाँ वह व्यक्त करता है कि उसे जंगल में जाना है उसके लिए करेला काटो, उसने अपना घर छोड़ दिया है।

करमा नृत्य – बैगा इस नृत्य शैली का आविष्कार करने के लिए जाने जाते हैं। कर्मा मध्य भारतीय आदिवासियों के बीच भी प्रसिद्ध है। एल्विन के अनुसार, यह नृत्य शैली बैगा जनजाति द्वारा किये जाने वाले सभी नृत्यों की जननी है।[14] करमा नृत्य करते समय गाया जाने वाला गीत ददरिया से भी लंबा होता है। कर्मा नृत्य में कई प्रकार के चरण होते हैं। इसे स्त्री पुरूष दोनों गाते हैं।

बिल्मा – यह बैगा समुदाय का एक नृत्य है जो विवाह के दौरान किया जाता है। इसे विरह नृत्य के रूप में भी जाना जाता है, जहाँ दुल्हन अपनी शादी के बाद अपने परिवार से अलग हो जाती है। यह उस दर्दनाक क्षण का प्रतीक है जब दुल्हन का परिवार अपनी बेटी से अलग हो जाता है और अपने पति के घर की ओर बढ़ता है।

रीना – यह नृत्य बैगा महिलाओं द्वारा किया जाता है जहाँ वे पारम्परिक पोशाक पहनती हैं। रीना नृत्य करते समय महिलाएं मांदर और अन्य वाद्ययंत्रों की थाप के साथ अपने पैरों को पहले पीछे की ओर और फिर आगे की ओर घुमाती हैं।

2. पहेलियाँ – वे मनोरंजन और शगल का एक और साधन हैं जिन्हें खेलने में बैगा को आनंद आता है। यह इन जनजातियों के लिए एक बौद्धिक खेल माना जाता है क्योंकि यह उन्हें एक दूसरे के साथ संवाद करने के उत्कृष्ट अवसर प्रदान करके वास्तविक सामुदायिक निर्माण में मदद करता है।[15] बैगा लोग अक्सर दिन के काम से घर लौटने के बाद रात में खाली समय में व्यावहारिक चुटकले और पहेलियाँ खेलने के लिए एक साथ बैठते हैं।[16] पहेलियाँ आदिवासी भाषा की विशेषता और उनके मन की प्रतीकात्मक प्रकृति की झलक पेश करती है। वेरियर ऐल्विन ने अपनी पुस्तक द बैगा में बैगा लोगों द्वारा खेली जाने वाली कुछ लोकप्रिय पहेलियों को साझा किया है। उनके मुताबिक, इनमें से कुछ पहेलियाँ हास्य से भरपूर हैं, तो कुछ दोहरे अर्थ वाली ओर बेहद अश्लील हैं। उनकी पुस्तक में उल्लिखित कुछ पहेलियाँ हैं –

तुम पीछे रहो, मैं जा रहा हूँ।
–एक आदमी अपने पदचिन्ह से बात करता है।
हल चलाओ, जुआँ पकड़ो।
– पति और पत्नी
जड़ है नदी में, फूल है पहाड़ी पर
– एक मिट्टी का दीपक

3. लोककथाएँ –

बैगा अपनी पारम्परिक लोककथाओं के लिए सबसे प्रसिद्ध है। इन्हें अन्य आदिवासी समुदायों से अलग बताया जाता है। कहावतें, मिथक और लोककथाएँ मौखिक साहित्य के रूप में हैं। बैगा जनजाति का मानना है कि ये लोककथाएँ उनके समुदाय से मिलती जुलती हैं और उन्हें इस कहानी का हिस्सा होने पर गर्व है। वे लोककथाओं के इतने शौकीन हैं कि यह मौखिक परम्परा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक चलती रहती है। लोककथाएँ समुदाय के भीतर बैगा संस्कृति और परम्परा की मान्यताओं को संप्रेषित करने और प्रचारित करने की विधियाँ हैं। इससे उन्हें इस आदिवासी समुदाय की विरासत को सुरक्षित रखने में मदद मिलती है। इन कहानियों की अनोखी विशेषता यह है कि ये हमेशा सच्ची कहानी जैसी लगती हैं और बैगा के निजी जीवन का हिस्सा प्रतीत होती है।[17]

कुछ प्रसिद्ध बैगा लोककथाएँ हैं – सात बहनों की कहानी, सुराही, गाय की कृपा, पैसे का घमंड, एक राजा और तीन रानी की कहानी, बिटनु और नदिया, नेवता और सात भाई, एक राजा और एक चोर, बुधिया और खरगोश, बांसुरी का विवाह, लक्ष्मी बड़ी की सत्य, सात भाइयों का विवाह, खरगोश का विवाह, चार भाई शिकारी और कई अन्य लोककथाएँ जानवरों, मनुष्यों और प्रकृति के विषयों पर आधारित हैं। चाहे वह सजीव हो या निर्जीव, बैगा के आसपास मौजूद हर चीज की एक कहानी होती है। इसके कुछ उदाहरण हैं बिजली (गरज), वर्षा (बारिश), आग (आग), हाथी (हाथी), कुत्ता (कुत्ता), बाघ (बाघ), बंदर (बंदर), बाल (बाल), नमक (नमक) की कहानियाँ।[18]

4.टैटू संस्कृति – चार्ल्स डार्विन (द डिसेंट ऑफ मैने एंड सिलेक्शन इन रिलेशन टू सेक्स) के शब्दों में, ''उत्तर में ध्रुवीय क्षेत्रों से लेकर दक्षिण में न्यूजीलैंड तक, एक भी महान देश का नाम नहीं लिया जा सकता, जिसमें आदिवासी खुद टैटू नहीं बनवाते। गोदना आदिवासी संस्कृति का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है। बैगा एक ऐसे आदिवासी लोग हैं जो टैटू बनाने के शौकीन हैं। टैटू एपिडर्मिस (त्वचा की सबसे बाहरी परत) में रंगद्रव्य (स्याही) डालकर शरीर पर बनाए गए स्थायी निशान या डिजाइन हैं। यह वास्तव मे एक दर्दनाक प्रक्रिया है क्योंकि त्वचा की परत के अंदर स्याही डालने के लिए सुई का उपयोग किया जाता है। बैगा लोग अपने पूरे शरीर पर टैटू गुदवाते हैं। बैगा महिलाओं में गोदना संस्कृति पुरूषों की तुलना में अधिक प्रसिद्ध है।[19]

गौतम, 2011 के अनुसार, बैगा जनजातियाँ बचपन से ही टैटू बनाना शुरू कर देती हैं और वयस्क होने तक चरणों में कला बनाना जारी रखती हैं। वे पहचान, भावनात्मकता, अलंकरण, सजावट, धार्मिक और आध्यात्मिक कारणों से टैटू बनवाना चुनते हैं। बैगिंस के शरीर पर टैटू का सबसे गंभीर महत्व यह है कि वे उनके लिए यौन अभिव्यक्ति का एक रूप और एक शक्तिशाली यौन उत्तेजक है। अपने टैटू के साथ, महिला

जनजातियाँ उन्हें सुशोभित करती है और यौन गतिविधियों के लिए अपने पुरूष समकक्षों को आकर्षित करती हैं।[20]

बैगा जनजातियाँ कुछ समूहों के साथ अपनी पहचान के रूप में भी टैटू का उपयोग करती हैं। टैटू का उपयोग किसी महिला की समृद्धि को बताने के लिए भी किया जाता है। टैटू का क्षेत्र जितना बड़ा होगा, महिला उतनी ही अधिक समृद्ध होगी। सबसे आम टैटू डिजाइनों में मोर, मक्खियाँ, मछली की हड्डियाँ, त्रिकोण, टोकरियाँ, जादुई जंजीरें, हल्दी की जड़ें आदि शामिल हैं। इस समुदाय के महत्वपूर्ण पहलू मुख्य रूप से डिजाइनों को प्रेरित करते हैं। पुरूषों के बीच प्रसिद्ध डिजाइन में हाथ, पीठ पर चन्द्रमा और बांह पर बिच्छू हैं।[21]

5. विवाह – यह एक सामाजिक घटना है जहाँ परिवार, समूह, समुदाय और गाँव सहित सभी स्तरों पर संचार होता है। बैगाओं के बीच यह कोई सुस्थापित घटना नहीं है। हालांकि, इस जनजाति में पुरूषों और महिलाओं के बीच विवाह पूर्व सम्बन्ध एक आम बात है। इसके अलावा, यह सामाजिक रूप से स्वीकृत है। वे एक पत्नीत्व का अभ्यास करते हैं, जहाँ एक पुरूष की शादी समय के साथ दो या दो से अधिक महिलाओं से होती है।[22] वे सामाजिक लोग हैं और मानते हैं कि कोई भी वयस्क बिना साथी के नहीं रहता। इसी तरह उनका यह भी मानना है कि कोई भी बच्चा माता–पिता के बिना नहीं रहता। इसलिए, तलाक या पुनर्विवाह के बाद जोड़े अक्सर अपने पिछले साथी के बच्चे को अपने नए परिवार में ले आते हैं। बैगा विवाह की एक अनूठी विशेषता यह है कि वे अपने साथी का चयन किस प्रकार करते हैं। इनमें से कुछ रोमांचक तरीके हैं बातचीत (मंगनी), घुसपैठ (पाथुल), सेवा (लमसेना), पलायन (उथवा), चोरी, पुनर्विवाह (उघरिया) आदि।[23] सभी तरीकों से सफल विवाह के लिए दोनों पक्षों यानी वर वधू के बीच उचित संवाद स्थापित किया जाता है। प्रेम विवाह या चोर विवाह में, गाँव का मुखिया (जहाँ वे दोनों भाग गए हैं) परिवारों को सूचित करता है और विवाह कराता है। मंगनी (बातचीत) के मामले में, दुल्हन के मामा शादी की बातचीत शुरू करने के लिए शराब की बोतल उठाते हैं। शराब की बोतल दूल्हे के परिवार को यह बताने का एक तरीका है कि वे शादी के लिए तैयार है। पाथुल (घुसपैठ) विवाह के दौरान, लड़की लड़के के परिवार में घुसपैठ करती है और उसके धैर्य और सहनशीलता का परीक्षण करती है। लड़के का परिवार उस पर अत्याचार और शोषण करता है।[24] यह एक और उदाहरण हैं जहाँ लड़की और लड़के के परिवार के बीच संवाद के परिणामस्वरूप सफल विवाह होता है। गीत, संगीत और नृत्य जैसे मौखिक साहित्य बैगा समाज में विवाह का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। ये मौखिक संचार रूप नवविवाहितों के परिवारों के बीच एकता, खुशी और बंधन को दर्शाते हैं।

6. कला और शिल्प – बैगन दृश्य कला का वर्णन करने के लिए बहुत कम है। टोकरी बनाना बैगा द्वारा की जाने वाली प्रसिद्ध कलाओं और शिल्पों में से एक है। वे अपने व्यक्तिगत उपयोग के साथ–साथ बेचने के उद्देश्य से भी टोकरी बनाने का काम करते हैं। वे अपने घरों को सजाने के लिए कला और शिल्प भी करते हैं। वे अपने घर को खुद ही सजाते हैं और इसके लिए किसी को काम पर नहीं रखते।[25] इसके अलावा, वे अपना घर भी खुद ही बनाते हैं। इसकी सबसे अच्छी बात यह है कि वे घरों के लिए ईंटें खुद ही बनाते हैं। बैगा जनजातियों की सबसे लोकप्रिय कला टैटू बनाना है। मानव शरीर पर बने टैटू डिजाइन बैगा संस्कृति का प्रतीक हैं। वे इन लोगों के जीवनचक्र के प्रत्येक चरण में अलग–अलग अर्थ दर्शाते हैं। यह सामुदायिक पहचान का भी प्रतीक है।[26]

7. त्यौहार एवं मेले – बैगा कैलेंडर की प्रकृति कृषि प्रधान है। वे होली, दीवाली और दशहरा जैसे त्यौहार भी मनाते हैं। दशहरे के दौरान, बैगा बिदा अनुष्ठान करते हैं, जहाँ पुरूष अपने परिवार या समुदाय को परेशान करने वाली किसी भी आत्मा का निपटान करते हैं। उनके त्यौहार हैं –

- चेरता/किचराही त्योहार – यह बच्चों का त्योहार है जो जनवरी में मनाया जाता है
- फाग – मार्च में महिलाओं को पुरूषों को पीटने की अनुमति होती है
- बिदरी – फसलों की सुरक्षा और आर्शीवाद जून में आयोजित किया जाता है
- हरेली – अच्छी फसल के लिए अगस्त में आयोजित की जाती है

- पोला – यह अक्टूबर में आयोजित हरेली के समान ही है
- नवा पर्व – फसल के लिए धन्यवाद – बरसात के मौसम के अंत में आयोजित किया जाता है।

8. धार्मिक विचार एवं खेल – इस प्रकार का संचार दुनिया भर की अधिकांश जनजातियों की एक अनूठी विशेषता है। संचार के इस रूप में, जनजातियाँ अलौकिक शक्तियों यानी भगवान या देवता और भूतों या आत्माओं के साथ संवाद करती हैं। कुछ समुदायों द्वारा बैगा जनजातियों को अक्सर अलौकिक शक्तियों से युक्त बताया जाता हैं उनकी अलौकिक आस्था को दो श्रेणियों में बांटा गया है – पहला विश्वास देवता या भगवान (देव) के प्रति है और दूसरा आत्माओं (भूत) के प्रति है। जबकि देव देखभाल करने वाला है और कभी किसी के साथ गलत नहीं करता है, भूत शत्रुपूर्ण और सहानुभूतिहीन है।[27] ये जनजातियाँ अपने पूर्वजों की तरह कई घरेलू देवताओं का सम्मान करती है। बैगा खुद को जानवरों का स्वामी मानते हैं। वे प्रकृति प्रेमी हैं और यही कारण है कि उनके देवता अधिकतर प्रकृति का चित्रण करते हैं।

बैगा लोग बुरहा देव, दूल्हा देव, ठाकुर देव (भूमि के देवता), गनसम देव (जंगली जानवरों से रक्षा करने वाले देवता), नारायण देव, भीमसेन देव (बारिश के देवता), खेर माई, बूरी माई, धरती माता जैसे देवताओं की पूजा करते हैं। ये जनजातियाँ पृथ्वी की माँ मानती हैं क्योंकि उनका मानना है कि यह धरती माता है जिसने जीवित प्राणियों को जन्म दिया है। वे धरती माता के प्रति बहुत सम्मान रखते हैं और खेती के लिए जमीन भी नहीं जोतते हैं।[28] बैगा लोगों के अनुसार भूमि की जुताई करना माता के शरीर को कष्ट पहुंचाने के समान है। देवताओं को प्रसन्न करने के लिए उन्हें नारियल और महुआ (मधुका लोंगिफोलिया) से बनी घरेलू शराब चढ़ाई जाती है। बैगा लोगों द्वारा भी सांपों को पवित्र माना जाता है और वे उनकी पूजा देवता के रूप में करते हैं। ये आदिवासी लोग विशेषज्ञ जादूगर भी होते हैं।[29] वे मौसम की स्थिति और जानवरों को नियंत्रित करने के लिए जादू करते हैं। वे जादू का उपयोग करके बीमारियों का इलाज भी कर सकते हैं और प्रजनन की क्षमता भी सुनिश्चित कर सकते हैं। शोधकर्ताओं के अनुसार, समुदाय में ऐसे धार्मिक अनुयायी हैं जिन्हें अलग–अलग नामों से जाना जाता है। उनमें से कुछ हैं –

देवार – ये वे लोग हैं जो कृषि संस्कार करते हैं। वे जादुई तरीके से भूकंप रोक सकते हैं और गाँव की सीमाएं खत्म कर सकते हैं।
गुनिया – ये लोग रोगों का धार्मिक उपचार जादुई ढंग से करते हैं।
जन पांडे (अतीन्द्रिय) – ये लोग मन के पाठक होते हैं। वे अलौकिक चीजों तक भी पहुंच सकते हैं।

खेल संचार के आधुनिक साधन –

1. रेडियो – इसकी पोर्टेबिलिटी प्रकृति और कम लागत के कारण इसे अक्सर लोगों का माध्यम कहा जाता है। यहाँ तक कि औसत वित्तीय स्थिति वाले लोग भी टीवी और प्रिंट मीडिया जैसे अन्य समकक्षों के मुकाबले रेडियो खरीदने में सक्षम हो सकते हैं। रेडियों के लिए यह आवश्यक नहीं है कि उसका उपयोगकर्ता साक्षर हो। यहाँ तक कि एक अनपढ़ व्यक्ति भी जानकारी प्राप्त करने के लिए रेडियो का उपयोग कर सकता है। बैगा के लिए भी, टेलीविजन या समाचार पत्र की तुलना में रेडियो जनसंचार का एक लोकप्रिय माध्यम है। अपनी पुस्तक बैगा : द हंटर गैदरर्स ऑफ सेंट्रल इंडिया 2011 में राजेश गौतम ने अपने अध्ययन को साझा किया है जहाँ उन्होंने रेडियो और टेलीविजन जैसे संचार के आधुनिक साधनों से बैगा जनजातियों के संचार चाहने वाले व्यवहार का विश्लेषण किया है। अध्ययन मे पाया गया कि 409 बैगा उत्तरदाताओं में से 59.40 प्रतिशत ने कहा कि उन्होंने रेडियो सुना है, जबकि केवल 29.60 प्रतिशत बैगा ने कहा कि उन्होंने टेलीविजन देखा है। गौतम 2011 के अध्ययन मे रेडियो को बैगा के बीच संचार का एक लोकप्रिय माध्यम पाया गया। हालांकि, उन्होंने इस बात पर भी प्रकाश डाला है कि रेडियो सुनने वाले बैगा के पास जरूरी नहीं कि वे रेडियो सेट हो क्योंकि उनमें से अधिकांश उन सेटों को खरीदने में सक्षम नहीं थे।[30]

2. टेलीविजन – यह खेल संचार का एक और सबसे प्रभावी माध्यम है जो जनता को एक साथ लाकर परिवर्तन और विकास की गति को बढ़ा सकता है। यह एक श्रवय और दृश्य माध्यम है और इसलिए इसे समझना आसान है। इडियट बॉक्स, जैसा कि टीवी रूपक के रूप में जाना जाता है, बैगा जनजाति के विकास

के मामले में भी चमत्कार कर सकता है।[31] लेकिन इन जातियों की टेलीविजन तक पहुंच मुश्किल से ही है।[32] वे अपनी खराब वित्तीय स्थिति के कारण टेलीविजन सेट खरीदने में सक्षम नहीं हैं। गौतम द्वारा किया गया एक अध्ययन 2011 ने अपनी पुस्तक बैगा : द हंटर गैदरर्स ऑफ सेंट्रल इंडिया में बताया कि अध्ययन में भाग लेने वाले 409 मे से केवल 29.6 प्रतिशत बैगा उत्तरदाताओं को टेलीविजन देखते हुए पाया गया।[33] गौतम के अनुसार, जिन लोगों ने टेलीविजन देखा था, उनके पास इसका स्वामित्व नहीं था। वह आगे कहते हैं कि बैगा के पास गाँव में देखने के लिए मुश्किल से एक या दो काले और सफेद टेलीविजन सेट थे और बिजली पर पूरी निर्भरता थी, जो इन जनजातियों को मुश्किल से ही उपलब्ध होती थी। गौतम के अवलोकन के आधार पर, यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि बैगा ने जानकारी प्राप्त करने के लिए शायद ही कभी टेलीविजन का उपयोग किया हो। वर्तमान अध्ययन में वर्तमान परिदृश्य का पता लगाने का प्रयास किया गया।

3. मुद्रित सामग्री – जनसंचार माध्यमों के इस रूप में समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, पत्र, नोटिस और लिखित रूप में उपलब्ध कई अन्य सूचना माध्यम शामिल हैं। उन्हें जानकारी का सबसे प्रामाणिक और भरोसेमंद स्रोत माना जाता है क्योंकि हर चीज का दस्तावेजीकरण किया जाता है। चूँकि अधिकांश बैगा लोग अशिक्षित हैं, इसलिए वे संचार उद्देश्यों के लिए इन माध्यमों का उपयोग मुश्किल से कर पाते हैं। गौतम के अध्ययन में भी इसी तरह के परिणाम मिले हैं। संचार का एक अन्य साधन पत्र है जिसका उपयोग केवल साक्षर लोग ही करते हैं। उनके अध्ययन में, 409 उत्तरदाताओं में से 12.5 प्रतिशत ने सूचनाओं के आदान प्रदान के लिए पत्र लिखे थे। वर्तमान अध्ययन में बैगा जनजाति के बीच खेल समाचार पत्र और प्रिंट मीडिया के उपयोग के बारे में और अधिक जानने का प्रयास किया गया है।[34]

4. इंटरनेट – वेब मीडिया आज की पीढ़ी में खेल संचार के सबसे तेज माध्यमों में से एक है। इंटरनेट के युग में दुनिया के एक हिस्से से दूसरे हिस्से तक संचार बस एक क्लिक की दूरी पर है। वर्ल्ड वाइड वेब ने प्राचीन काल से संचार के तरीके को पूरी तरह से बदल दिया है। इसके अनगिनत फायदे हैं, लेकिन बैगा समाज में इंटरनेट सुविधाओं तक पहुँच बहुत ही असामान्य है।[35] कुछ साक्षर और जिनके मोबाइल फोन पर इंटरनेट की सुविधा है, उन्होंने जानकारी प्राप्त करने के लिए इंटरनेट का उपयोग किया होगा। लेकिन बैगा जनजाति के लिए न्यू मीडिया अभी भी बहुत नया है।

निष्कर्ष :

बैगा जनजाति में खेल के प्रति अभिरूचि का अध्ययन करने के लिए क्रियान्वित की गई अध्ययन से प्रकट होता है कि खेल और सांस्कृतिक गतिविधियों का महत्व बैगा जनजाति के लोगों के जीवन में बहुत अधिक है। इस अध्ययन से हमें पता चलता है कि खेल उनकी सांस्कृतिक पहचान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और उनके समाज में सामाजिक सहयोग, समरसता और सम्मान को बढ़ावा देता है। इस अध्ययन के आधार पर, सामाजिक और राजनीतिक नीतियों को विकसित किया जा सकता है जो खेल के विकास को प्रोत्साहित करती हैं और बैगा जनजाति के सांस्कृतिक धन को संरक्षित रखती हैं। इस अध्ययन के माध्यम से हमें बैगा जनजाति के खेल के प्रति जनजाति के उत्साह को बढ़ावा देने में मिलेगी, साथ उनकी सांस्कृतिक विरासत को समृद्धि से भरने में मदद करगी।

संदर्भ –

[1] मामोरिया, डॉ. चतुर्भुज (2006) – भारत का आर्थिक विकास एवं नियोजन, साहित्य भवन पब्लिकेशन, नई दिल्ली

[2] विकिपीडिया, आदिवासी (भारतीय) http://hi/wikipedia.org/s/pdf

[3] नदीम हसनैन (2006) – जनजातीय भारत, जवाहर पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली

[4] तिवारी, शिवकुमार (2006) – मध्यप्रदेश की जनजातीय संस्कृति, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल

[5] चौथा संसार (2006) – परिवर्तन की लहर से अछूता रहा आदिवासी जीवन

[6] सेसेक्स ऑफ इंडिया (2011) – www.censusindia.gov.in

[7] पाण्डेय, गया (2007) – भारतीय जनजातीय संस्कृति, कंसैप्ट पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली
[8] Madhya Pradesh blogpostin/2013/08/blog_post_1839.html
[9] जैन, कल्पना (2007) – बैगा जनजाति द्वारा उपयोग में लाए जाने वाले उपकरण, आदिम जाति अनुसंधान एवं विकास संस्थान, भोपाल
[10] द्विवेदी, राधेश्याम (2007) – मध्यप्रदेश पंचायत राज एवं ग्राम स्वराज अधिनियम, सुविधा लॉ हाउस प्राइवेट लिमिटेड, भोपाल
[11] तिवारी, शिवकुमार एवं शर्मा, कमल (2009) – मध्यप्रदेश की जनजातियाँ समाज एवं व्यवस्था, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल
[12] द्विवेदी, राधेश्याम (2008) – मध्यप्रदेश पंचायत राज एवं ग्राम स्वराज अधिनियम, सुविधा लॉ हाउस, प्राइवेट लिमिटेड, भोपाल
[13] जैन, डॉ. यू.सी. (2009) – भारतीय समाज में जनजातीय समाज का आर्थिक अध्ययन, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल
[14] मोहन्ती, पी.के. (2002) – प्लानिंग फार डेवलपमेंट इन इंडिया, आदिवासी, भाग–35, नं. 1
[15] चौरसिया, विजय कुमार (2009) – प्रति पुत्र बैगा, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल
[16] पाण्डेय, गया (2007) – भारतीय जनजातीय संस्कृति, कंसेप्ट पब्लिशिंग, कम्पनी, नई दिल्ली
[17] जैन, डॉ. यू.सी. (2009) – भारत में जनजातीय समाज का आर्थिक अध्ययन, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल
[18] जिला कार्यालय आदिवासी विभाग, सीधी (म.प्र.) सर्वेक्षण, 2012
[19] शर्मा, ए.एन. (2009) – भारतीय मानव विज्ञान, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद
[20] भारत कोष, www.bharatdiscovery.org/india/बैगा जनजाति
[21] महाजन, डॉ. धर्मवीर – सामाजिक मानवशास्त्र, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली, 2008, पृष्ठ 202
[22] माथुर, डॉ. वी.एल. – आर्थिक नीति एवं विकास, अर्जुन पब्लिकेशन, 2009
[23] www.tribal.mp.gov.in.tribal welfare deptt.mp.
[24] मिश्रा, राजीव (2008) – वालेन्टरी सेक्टर एण्ड रूरल डेवलपमेंट, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर
[25] पाटिल, डॉ. अशोक एवं भदौरिया, डॉ. एस.एस. (2009) – समाजशास्त्र, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल
[26] खरे, देवेन्द्र कुमार (2008) – बैगा जनजातियों की आर्थिक संरचना का विश्लेषणात्मक अध्ययन, अप्रकाशित शोध प्रबंध, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी (उ.प्र.)
[27] मौर्य, आर.डी. (2009) – ट्राइबल्स एण्ड पंचायत ऑफ सेन्ट्रल इण्डिया, बी.आर. पब्लिशिंग कार्पोरेशन, दिल्ली
[28] राय, आर (2010) – आदिम जाति कल्याण विभाग द्वारा संचालित विद्यालय तथा सामान्य शासकीय में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की विज्ञान के प्रति अभिवृत्ति एवं उनकी शैक्षित उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन, अप्रकाशित लघुशोध प्रबन्ध, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)
[29] महाजन, डॉ. धर्मवीर (2008) – सामाजिक मानवशास्त्र, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली
[30] www.sidhi.nic.in
[31] डॉ. जैन, अरुण कुमार एवं प्रो. शर्मा, ए.एन. (2009) – The Impact of Education on the Economyh among the Baiga Tribe in Madhya Pradesh, India : A Brief Note : Edcucation Knowledge and Economy, Published online : https://www.researchgate.net/ 19 Dec. 2009, pages 177-182
[32] https:/www.tribal.mp.gov.in

[33] पटेल, डॉ. चन्द्र प्रकाश (2010) – जनजातीय समाज की ज्वलंत समस्याएं एवं उनके समाधान सूत्र, विन्ध्य भारती, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, वाल्यूम 1, नवम्बर 10, जुलाई 2010, पृष्ठ 49–56

[34] पटेल, डॉ. चन्द्र प्रकाश (2010) – जनजातीय समाज की ज्वलंत समस्याएं एवं उनके समाधान सूत्र, विन्ध्य भारती, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, वाल्यूम 1, नवम्बर 10, जुलाई 2010, पृष्ठ 49–56

[35] मौर्य, आर.डी. (2009) – ट्राइबल्स एण्ड पंचायत ऑफ सेन्ट्रल इण्डिया, बी.आर. पब्लिशिंग कार्पोरेशन, दिल्ली